ISSN No. 2349-4654
नाद-नर्तन जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूज़िक वर्ष : 4, अंक : 1, जनवरी 2017

पंजाब के सांगीतिक प्रचार में शिक्षण संस्थाओं, संगीत सम्मेलनों, एवं संचार माध्यमों का योगदान-एक विश्लेष्णात्मक अध्ययन

डॉ. मालविंदर सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर, हेड ऑफ़ म्यूजिक डिपार्टमेंट, श्रीगुरु गोविंद सिंह खालसा कॉलेज, माहिलपुर, होशियारपुर, पंजाब

पंजाब भारतवर्ष के लिए अतीत से ही गौरवशाली प्रांत रहा है। पंजाब की धरती प्राचीन काल से ही राजनैतिक, समाजिक, धार्मिक, आर्थिक तथा संस्कृतिक गतिविधियों की केन्द्र विन्दु रही है। इसलिए पंजाब का इतिहास अति समृद्ध एवं गौरवशाली रहा है। प्राचीन समय से ही पंजाब न केवल भारत की कला व सभयता की सर्वप्रथम भूमि रहा, बल्कि सम्पूर्ण विश्व को इतिहास, सभ्यता, संगीत से प्रभावित करता रहा है।[1] पंजाब की परम्परा विलक्षण, मनोरंजक और महान है। पंजाब में विभिन्न-विभिन्न रियासते, घराने हुऐ। पंजाब में पटियाला, कपूरथला, मलेरकोटला, नाभा और फरीदकोट मुख्य रियासतें रही। इन रियासतों में राज महलों में दरबारी गायक संगीत का विकास करते रहे। सामाजिक लोग लोक संगीत को अपना चुके थे, इस लिए धर्म के साथ संगीत जुड़ चुका था, मांगलिक, धार्मिक कार्यक्रमों में लोक संगीत का प्रचार हो रहा था, दूसरी तरफहिन्दुस्तानी घरानों में शिक्षा ग्रहण कर उच्च कोटि के कलाकार राज दरबारों में अपनी कला को बढ़ा रहे थे। इन राज दरबारी गुरुयों से शिक्षा प्राप्त कर, जो कलाकार जिस प्रांत, शहर, कसवे में रहा, वही उस का घराना कहलाने लगा। उस की कला से प्रभावित हो कर, जो गुरु शिष्य परम्परा से जुड़े, वहीं से घराने की नींव पड़ गई, जो वर्तमान समय में भी संगीत के प्रचार में योगदान दे रही हैं। पंजाब में मुख्य तलवंडी, श्याम चौरासी, कपूरथला, हरियाणा, पटियाला, कसूर, फिल्लौर और जाडला घराना रहे हैं।[2]

साक्षात्कार से यह शोध-पत्र में पहला पहलू बना कि—संगीत का शिक्षण संस्थाओं में पाठ्यक्रम के रूप में विकसित होने का आरम्भ काल रियासते, घराने रहे। गुरु शिष्य परम्परा में संगीत की सीमित शिक्षा समय के साथ-साथ जन साधारण तक पहुँची। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद संगीत के मूल्यों को अनुभव करते हुए इसे स्कूल के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया। आधुनिक काल की भौतिकता और तकनीकी दौड़ में आत्मिक और मानवीय मूल्यों की रक्षा के लिए संगीत शिक्षण जरुरी है। सत्यम शिवम सुन्दरम की पहचान, नैतिक मूल्यों सदाचार एवं देशभक्ति की भावना जैसे विषयों को उतेजित व उजागर करने के लिए शिक्षा प्रणाली में संगीत विषय का होना जरूरी है, इस कथन को गुणीजनों के अनुभव से समझते हुऐ अलग-अलग विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों, निजी संस्थाओं, संगीत सम्मेलनों ने प्रचार का माध्यम बनाया। सन् 1966 में पंजाब का गठन हुआ। शास्त्रीय संगीत के उत्थान के लिए सरकार द्वारा अनेक पग उठाए गए जिनमे सर्वप्रथम संगीत को शिक्षण संस्थाओं में विषय के रूप में मान्यता प्रदान की गई।

1. विद्यालयों का संगीत के प्रचार में योगदान

पंजाब सरकार ने अन्य राज्यों की भाँति विद्यालयों के पाठ्यक्रम में अन्य विषयों के साथ ऐच्छिक विषय के रूप में संगीत विषय को स्थान दिया। स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरान्त सांस्कृतिक विकास के प्रति जनसाधारण में जागरुकता उत्पन्न हुई और धीरे-धीरे पंजाब सरकार ने उस उत्तरदायित्व को स्वीकार किया और विद्यालय स्तर पर भारतीय संस्कृति व कलाओं के विकास के प्रयत्न किए। इस प्रकार पंजाब सरकार के शिक्षा विभाग ने जनसंख्या के अधार पर विद्यालय खोले तथा अनेक विद्यालयों में छठी कक्षा से लेकर बारहवीं कक्षा तक संगीत विषय की शिक्षा प्रदान की जाने लगी। आज संगीत शिक्षा हर इच्छुक व्यक्ति ग्रहण कर सकता है जिसकी संगीत विषय के प्रति रुचि है।

विद्यालय की शिक्षा प्रणाली ने आज संगीत विद्यार्थी के लिए अति सुगम मार्ग बना दिया है। नियमित पाठ्यक्रम नियत समय में व्यवस्थित रूप से तथा शुद्ध भाव से शिक्षक को अनिवार्य: पढ़ाना ही पड़ता है। पाठ्यक्रम की समानता तथा विद्यालयों के सुसभ्य वातावरण ने जहाँ एक ओर विद्यार्थियों में सद्भावना, प्रेम इत्यादि सद्गुणों का सृजन किया वहाँ दूसरी ओर संगीत कला के प्रति समाज में सम्मान दृष्टि का वातावरण बनाया। आज संगीत कला भी जनजीवन का आलिंगन कर लेना चाहती है। किन्तु आवश्यकता इस बात की है कि उसके मार्ग में जो कठिनाईयाँ हैं उन्हें दूर किया जाए। पंजाब प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा संगीत विषय के पाठ्यक्रम में उचित संशोधन किया जाए तथा संगीत विद्यार्थी की प्रगति में प्रशासन भी सहायक बने। पुस्तकालय में पर्याप्त पाठ्य सामग्री, प्रत्येक पाठशाला में संगीत का अध्यापक होना, समुचित स्थान की व्यवस्था, संगीत वाद्य यन्त्रों का उचित प्रबंध तथा तबला सहायक होना आवश्यक है।

इस प्रकार विद्यालयों का शास्त्रीय संगीत में योगदान केवल छात्रों को संगीत शिक्षा देने तक सीमित नहीं अपितु विद्यालयों में समय-समय पर संगीत सभाओं का भी आयोजन किया जाता हैं। विद्यालयों के विद्यार्थियों द्वारा स्थानीय मेलों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों तथा युवा समारोहों में भी भाग लिया जाता है।

2. महाविद्यालयों का संगीत में योगदान

पंजाब राज्य के शिक्षा विभाग के लगभग पचास महाविद्यालयों में शास्त्रीय संगीत को ऐच्छिक विषय के रूप में पढ़ाया जा रहा है। विभिन्न जिलों के महाविद्यालयों में गायन तथा वादन दोनों ही पक्षों का शिक्षण सुचारु रूप से हो रहा है। गायन तथा वादन दोनों पक्षों के अलग- अलग प्राध्यापक तथा अलग-अलग कक्षाओं की व्यवस्था है। किसी महाविद्यालय में तबला वादक है, किसी में एक भी तबला वादक नहीं। प्रत्येक महाविद्यालयों में पुस्तकालय की व्यवस्था है तथा संगीतोपयोगी पुस्तकें और पत्रिकाएँ उपलब्ध हैं। प्रत्येक महाविद्यालयों में वार्षिक युवा समारोहों में संगीत के विद्यार्थी बढ़ चढ़ कर भाग लेते हैं। समय-समय पर महाविद्यालयों में सेमीनार तथा संगीत संबंधी कार्य शिविरों का आयोजन किया जाता है जिससे कि संगीत के छात्रों में और अधिक जागरुकता आती है। पंजाब विश्वविद्यालय, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, और पंजाबी विश्वविद्यालय द्वारा प्रतिवर्ष सभी महाविद्यालयों का वार्षिक युवा समारोह आयोजित करवाया जाता है जिससे कि संगीत के विद्यार्थी को अपने विषय से संबंधित और अधिक रुचि बढ़ती जाती है तथा योग्य विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय द्वारा पहले, दूसरे तथा तृतीय स्थान पर आने वाले विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए जाते हैं। सभी महाविद्यालयों में संगीत का शिक्षण पंजाब विश्वविद्यालय, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, और पंजाबी विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम के अनुसार हो रहा है। इन महाविद्यालयों से संगीत शिक्षा प्राप्त कर अनेक विद्यार्थी ऐसे उच्च स्थानों तक पहुँचे हैं जो संगीत की निरन्तर सेवा कर रहे हैं। इनकी सेवा से पंजाब संगीत प्रगति की ओर अग्रसर है। इन महाविद्यालयों से संगीत शिक्षा प्राप्त कर चुके बहुत से विद्यार्थी वर्तमान में पंजाब से बाहर विश्वविद्यालयों से संगीत की स्नात्कोतर शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि पंजाब के महाविद्यालयों से शिक्षित विद्यार्थी शास्त्रीय संगीत के उत्थान के लिए महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

3. विश्वविद्यालयों का संगीतिक प्रचार

पंजाब में प्राइवेट व सरकारी विश्वविद्यालय संगीत शिक्षा का विकास कर रहे हैं उनमें मुख्य पंजाब विश्वविद्यालय, पंजाबी विश्वविद्यालय, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, लवली प्रोफेशनल विश्वविद्यालय, संत बाबा भाग सिंह विश्वविद्यालय, देश भगत विश्वविद्यालय इत्यादि हैं। जिसमें शास्त्रीय संगीत के स्वतंत्र विभाग खोले गये हैं तथा प्रथम चरण में स्नातक स्तर तक प्रशिक्षण देने का प्रावधान किया गया है। उसके उपरान्त यह सुविधा स्नातकोत्तर तक दी जाने लगी है जिसमें एम. ए., एम.पी.ए. तक की कक्षाओं को पढ़ाई करवाई जाने लगी है। कुछ वर्षों से इन विश्वविद्यालयों में संगीत में अनुसंधान कार्य को प्रोत्साहन देने के लिए पी.एच.डी. की उपाधि भी प्रदान की जाने लगी है। इन विश्वविद्यालयों में संगीत विषय पर सेमीनार, अभिविन्यासित कार्यक्रमों व वरिष्ठ संगीतज्ञों द्वारा संगीत सभाओं का आयोजन समय-समय पर किया जाता है। भारतवर्ष के अन्य राज्यों के सुप्रसिद्ध गायन तथा वादन के संगीतज्ञों को आमन्त्रित कर यहाँ संगीत कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है जिससे कि यहाँ के संगीत विद्यार्थी शिक्षण में और अधिक रुचि लेते हैं। इन विश्वविद्यालयों में इच्छुक संगीत विधार्थी भाग लेते हैं तथा प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय स्तर पर भाग लेने के लिए भेजा जाता है।

इन विश्वविद्यालयों का एक विशाल पुस्तकालय है जिसमें संगीत विषय की अनेक पुस्तकें पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं। संगीत से संबंधित अनेक पत्र-पत्रिकाएँ पुस्तकालय में उपलब्ध हैं। विश्वविद्याय अपनी शिक्षा व्यवस्था में स्वतंत्र है।

4. पंजाब तथा केंद्रीय सरकारों द्वारा संगीत के विकास में भूमिका

पंजाब सरकार द्वारा यहाँ की कला व सांस्कृतिक विकास में लिए पंजाब भाषा, कला एवं संस्कृति अकादमी की स्थापना की। अकादमी अनेक कार्यक्रमों के माध्यम से शास्त्रीय संगीत को प्रोत्साहन दे रही है। इनमें वयोवृद्ध कलाकारों को पेंशन योयना द्वारा सहायता देना, गुरु-शिष्य परम्परा द्वारा परम्परागत ढंग से शास्त्रीय संगीत की शिक्षा प्रणाली को प्रोत्साहित करना, संगीत पर शोध कार्य के लिए छात्रवृतियाँ देना, परियोजना अनुदान देकर संगीत में अनेक महत्त्वपूर्ण शोध कार्य पूर्ण करवाए जा रहे हैं। दूसरे राज्यों से प्रतिष्ठित संगीतज्ञों को आमन्त्रित करके विभिन्न संगीत कार्यक्रमों का आयोजन करवाना, संगीत व साहित्य सम्बन्धी पुस्तकों के प्रकाशन में लेखकों की आर्थिक सहायता करना, सांस्कृतिक एवं साहित्यक क्षेत्र में कार्य कर रही संस्थाओं को समारोह आयोजन के लिए आर्थिक सहायता अनुदान दिया जाता है। अत: पंजाब कला, संस्कृति एवं भाषा अकादमी इस प्रदेश के सांस्कृतिक उत्थान के लिए प्रशंसनीय कार्य कर रही है।

पंजाब सरकार ने प्रदेश में सांस्कृतिक कार्यक्रमों को सुचारु रूप से कार्यान्वित करने के लिए सवतंत्र विभाग का भी गठन किया है। लोक सम्पर्क विभाग भी अपनी सीमा अनुसार इस क्षेत्र में कार्य कर रहा है। इस प्रकार पंजाब सरकार व इसके द्वारा स्थापित संस्थाओं में शास्त्रीय संगीत का प्रचार-प्रसार व्यापक स्तर पर किया जा रहा है।

पंजाब प्रदेश के दोआबा क्षेत्र में केन्द्र सरकार द्वारा स्थापित आकाशवाणी केन्द्र तथा दूरदर्शन केन्द्र भी शास्त्रीय संगीतज्ञों की परम्परागत कला को जनसाधारण तक तो पहुंचा ही रहा है और इसे जीवित रखने में भी अहम् भूमिका निभा रहा है।[3]आकाशवाणी केन्द्र इस क्षेत्र में विभिन्न शास्त्रीय संगीत सम्मेलनों का आयोयन करवाता रहता है जिससे कि शास्त्रीय संगीत के जिज्ञासु संगीत की

शैलियों को आत्मसत् करते रहते हैं। भारत सरकार द्वारा पंजाब के हर क्षेत्र में एक-एक नवोदय विद्यालय खोल रखे है जिसमें कि संगीत विषय भी पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है तथा प्रत्येक केन्द्रीय व नवोदय विद्यालय में एक-एक संगीत अध्यापक की नियुक्ति कर रखी है। इस प्रकार केन्द्र सरकार द्वारा स्थापित संस्थाओं में भी शास्त्रीय संगीत व लोक संगीत का प्रचार व्यापक रूप से किया जा रहा है।

5. निजी संस्थाओं द्वारा शास्त्रीय संगीत एवं लोक संगीत का प्रचार

जहाँ सरकारी संस्थाएँ शास्त्रीय संगीत के व्यापक प्रचार व प्रसार के लिए कार्य कर रही हैं वहीं यहाँ की सामाजिक संस्थाएँ, संगीत की संस्थाएँ भी इस प्रदेश में शास्त्रीय संगीत के सम्पूर्ण विकास के लिए अपना अमूल्य योगदान दे रही हैं। इस समय पंजाब में लगभग 150 ऐसी संस्थाएँ हैं जिनमें परम्परागत शैली में संगीत में प्रशिक्षण की सुविधा प्रदान की जा रही है। इनमें संगीत की परीक्षाएँ नियमित रूप से ली जाती हैं। उतीर्ण होने पर प्रमाण पत्र भी दिए जाते हैं। इन्हे प्राप्त करने के बाद संगीत के विद्यार्थी संगीत के अध्यापक, कलाकार, व अन्य कोई दूसरी नौकरी प्राप्त कर रहे हैं। परीक्षाओं के लिए यह संस्थाएँ देश के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों तथा संस्थानों से सम्बन्धित है जिनमें प्रयाग संगीत समिति, इलाहाबाद तथा प्राचीन कला केन्द्र, चण्डीगढ़ के नाम उल्लेखनीय हैं।[4]

शोधकार्य के दौरान यह पता चला कि गन्धर्व महाविद्यालय की प्रथम शाखा लाहौर से सन् 1956 में पंडित रमेश चंद्र दश्र जी द्वारा दोआबा क्षेत्र के होशियारपुर शहर में वकीलां बाज़ार में स्थित की गई।[5] यहाँ पर विशारद् तक की परीक्षाएँ सम्पन्न होती थीं। पंजाब में मुख्य रूप से यही एक संगीतिक विद्यालय था जहाँ पर केवल संगीत विषय की उपाधि प्रदान की जाती थी। उससे पहले किसी भी निजी संस्था में परीक्षा की उचित व्यवस्था नहीं थी। साक्षात्कार करते समय गन्धर्व महाविद्यालय के विषय पर सं कृपाल सिंह जंडू जी ने बताया, ''पंजाब के जितने भी उस्ताद आज संगीत क्षेत्र में कार्यकृत हैं, उनके संगीत शिक्षक होने का प्रमाण पत्र केवल होशियारपुर के गन्धर्व महाविद्यालय से प्राप्त होता था।'' होशियारपुर में 'बसन्त उत्सव' बाबा भण्डारी जी के द्वारा हर वर्ष मनाया जाता था। बाबा भण्डारी जी के आग्रह पर विश्व प्रसिद्ध संगीतकार पंडित ओंकार नाथ ठाकुर, विनायक राव पटवर्धन, कृष्ण राव पंडित, पं. नारायण राव व्यास आदि अन्य प्रतिषिठ कलाकारों को निमन्त्रण दिया जाता था।[6]

इस प्रकार सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थाओं के सामूहिक प्रयासों से पंजाब में संगीत का सफल विकास हो रहा है। इसलिए यह कहना तर्कसंगत होगा कि भारतवर्ष स्वतन्त्रता के पश्चात् व पंजाब के गठन के उपरान्त पंजाब क्षेत्र में शास्त्रीय संगीत व लोक संगीत का समुचित विकास हुआ है तथा भविष्य में भी विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ है। इस प्रकार शास्त्रीय संगीत का महत्त्व दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है जो पंजाब के शास्त्रीय संगीत के चहुंमुखी विकास के लिए आवश्यक है।

6. संगीत सम्मेलनों व सभाओं का संगीतिक विकास में योगदान

वर्तमान पंजाब के लोग अपने जीवन में संगीत को महत्त्वपूर्ण स्थान दे रहे हैं। समय-समय पर शास्त्रीय संगीत व लोक संगीत के कार्यक्रम होते है। पंजाब में यहाँ शास्त्रीय संगीत के जिज्ञासु संगीत सम्मेलन व संगीत सभाएँ आयोजित करते हैं, वहीं लोक संगीत के लिए गांव-गांव में अखाड़े लगाए जाते हैं। सूफी संतों की डेरों व मज़ारों पर सक्रान्ति, पूर्णिमा व अमावस्या के दिनों में रात-रात भर कव्वालियों व नकलों के कार्यक्रम होते हैं।

पंजाब के शास्त्रीय संगीत के प्रमुख कार्यक्रम—हरिवल्लभ संगीत सम्मेलन, फगवाड़ा हैरीटेज, कपूरथला हैरीटेज, बसंत उत्सव बौडियाँ होशियारपुर, मास्टर रतन संगीत सम्मेलन, संगीत कला मंच, हेमंत उत्सव, बसंत उत्सव (हरिवल्लभ महासभा, जालन्धर) शामचैरासी संगीत सम्मेलन, समीक मैके के शास्त्रीय कार्यक्रम व हरिवल्लभ संगीत रिसर्च अकैडमी द्वारा आयोजित विभिन्न शास्त्रीय कार्यक्रम आयोजित करवाये जाते हैं।[7]

7. पिछड़ी—जन-जातियों का संगीत के विकास में योगदान

पंजाब के संगीतिक विकास में पिछड़ी जन जातियों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। पंजाब में पिछड़ी जन जातियों का दबदबा बना हुआ है। यहाँ 63% आबादी पिछड़ी श्रेणियों से संबंधित है। पिछड़ी जनजातियों में मुख्य कव्वाल, नकाल, भांड, मजबी सिक्ख, रामदासी सिक्ख, मीरासी, बाज़ीगर, रागी, रवाबी, ढाढी, डूम इत्यादि आते हैं।

1. इनका व्यवसाय (रोजगार) ज्यादातर गाना बजाना है।
2. इस श्रेणी के लोग शर्म-हया छोड़ कला सिद्धहस्त होते हैं जिसके फलस्वरूप वर्तमान समय में यही लोग संगीत क्षेत्र में आगे हैं।
3. यह लोग जन्मजात से ही संगीत कला से जुड़े हैं।
4. इनके घरों का माहौल संगीतमय रहता है। घर के बच्चे, बजुर्ग, औरतें, मर्द सभी संगीत को सम्मर्पित हैं।
5. इनके पूर्वजों ने तंगी, गरीबी तथा जिल्लत की जिन्दगी जीते हुए अपनी कला को नहीं छोड़ा तथा रियाज पर ध्यान दिया। जिसके फलस्वरूप आज इस श्रेणी के कला धारक संगीत में सर्वश्रेष्ठ हैं जिनकी मुख्य उदाहरण—सुखविन्दर सिंह बल्लू, सरदूल सिकंदर, हंसराज हंस, पूर्णशाहकोटि, सलीम इत्यादि हैं।
6. शोध के दौरान यह ज्ञात हुआ कि यह लोग केवल कला सम्पन्न हैं परन्तु इनमें सैद्धातिक शिक्षा का अभाव है। इस श्रेणी के लोग विद्या अर्जित नहीं करना चाहते जिस कारण इनके रहन-सहन में आधुनिकता का सामाजिक अभाव स्पष्ट दिखाई देता है।[8]

कव्वाल व लोक संगीत गायक देव हरियाणवी से चर्चा के दौरान पता चला कि, 'सलीम अपने पिता पूरणशाह कोटि के साथ गली-गली जा गाकर पैसे मांगते, सिर पर हारमोनियम, कंधों पर ढोलक टांगकर, खुशी के अवसरों पर गीत गाकर खाना जुटाते थे।'

उन्होंने दोआबा क्षेत्र में विकसित हो चुकी मीरासी परम्परा के इतिहास के विषय में बताया कि 'हमारे पंजाब में मीरासी दो तरह के हैं—एक मुसलमान मीरासी, दूसरे हिन्दू मीरासी'। पाकिस्तान में आज भी मुस्लमान मीरासी हैं जो अपना संबंध 11वीं शताब्दी के सूफी संत अमीर खुसरो से जोड़ते हैं। लेकिन पंजाब में मीरासी अपना संबंध भाई मरदाना से जोड़ने में अपनी शान समझते हैं तथा अपने आप को रवाबी कहलवाते हैं। वर्तमान समय में मीरासी परम्परा के लोगों ने सिक्ख धर्म धारण कर लिया है जो गुरबानी संगीत द्वारा अपनी जीविका चला रहे हैं। उदाहरण स्वरूप सिक्ख धर्म अपनाने वाले मुस्लमान मीरासी परम्परा के लोग इस प्रकार हैं—मुसलमान नाम जगीर मुहम्मद अब रागी जगीर सिंह, मुहम्मद दौलत खां अब रागी दौलत सिंह, फतेह अली खां अब रागी सरबजीत सिंह से जाने जाते हैं। रवाबी, रागी, नकाल, कव्वाल, डूम व भांड मीरासी परम्परा से जुड़े हुए मुख्य लोग—रवाबी अवतरा सिंह, रवाबी अमरीक सिंह जख्मी, रवाबी दविन्दर सिंह, रवाबी गुलबाग सिंह, रागी सतविंदर सिंह, रागी सुरजीत सिंह, रागी अवतार सिंह (पंजाब एंड सिंध बैंक वाले), रामा (नकाल), संत राम (नकाल), सतपाल घोड़ा (कव्वाल), देव हरियानवी (कव्वाल), रमेश चांद (डूम), काले राम (डूम), तिलक राज (डूम), बरकत सिद्धु (भंड मीरासी) इत्यादि हैं।[9]

8. संगीत के क्षेत्र में सूरदास श्रेणी के अध्यापक एवं कलाकरों की भूमिका

पंजाब के संगीतिक विकास में सूरदास श्रेणी के अध्यापक एवं कलाकारों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। इनका समाजिक जीवन कठिनाईयों से भरा रहा। इन्होंने संगीत की शिक्षा संगीतिक गुरुओं से बड़ी मेहनत से प्राप्त की। अधिकतर सूरदास श्रेणी के कलाकार गरीब थे जिन्होंने अपना व्यवसाय संगीत को चुना। इस श्रेणी में अध्यापक, रागी, कवि, ढाढी मुख्य रहे। इनमें से स्व. प्रो. दर्शन सिंह (कोमल), स्व. प्रो. चन्न सिंह (मज़बूर), रागी गुरदेव सिंह (फूल), रागी चन्न सिंह (सेवक), स्व. प्रो. एल. डी. (परदेसी), स्व. एन. एन. शर्मा, स्व. रागी दीदार सिंह, प्रो. भजन चन्द, मास्टर जसपाल, मास्टर तरसेम, रागी चन्न सिंह, स्व. रागी परसा सिंह इत्यादि प्रमुख रहे।[10]

9. संगीत के प्रसार में महिला संगीजज्ञों का योगदान

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के प्रसार में भारत की प्रमुख महिला संगीतज्ञों नें बढ़-चढ़ कर अपना योगदान दिया है। इनमें गंगूबाई हंगल, गिरिजा देवी, केसर बाई केरकर, रोशनारा बेगम, हीरा बाई बडोदकर, मेहरुन्निसां, परवीन सुल्ताना, मोधुबाई कुर्डीकर, किशोरी अमोनकर, अश्विनी भिड़े, श्रुति शिडोलकर, आरती अंकलेकर, लक्ष्मी बाई जाधव, मेनका शिरोडकर, प्रभा अत्रे, सरस्वती राने, मीता पंडित इत्यादि मुख्य हैं।

परन्तु स्वतन्त्रता के पश्चात् पंजाब के क्षेत्र में महिला संगीतज्ञों की संख्या में कोई वृद्धि नहीं हुई। संभावित तौर पर इसके मुख्य कारण कुछ इस प्रकार है—

1. जितनी रुचि माता-पिता लड़कों को संगीत का प्रशिक्षण दिलवाने में लेते हैं, उतनी लड़कियों में नहीं।
2. समाज में महिलाओं को संगीत में शिक्षा दिलवाना अच्छा नहीं समझा जाता था। लोग नाना प्रकार के ताने देते थे।
3. सीखने के लिए घर से दूर-दूर जाना पड़ता था।
4. यह अस्थिरता भी रहती थी कि यदि शादी ऐसे पुरुष के साथ तय हो गई जो संगीत को अच्छा न समझता हो तो सारा किया-कराया बरबाद होगा।
5. महिलाओं के लिए संगीत के क्षेत्र में शादी के बाद का समय कठिनाईयों से भरा होता है। इन सब का सामना करते हुए संघर्षपूर्ण परिस्थितियों में भी गायन, वादन के स्तर को बनाए रखना कठिन होता है।
6. महिला संगीतज्ञों का अधिकांश समय बच्चों के लालन-पालन में व्यतीत होता है, जिसके कारण वे अभयास के लिए समय नहीं निकाल पातीं।
7. अन्य घरेलू कामकाज भी महिलाओं की ही जिम्मेवारी मानी जाती है। भोजन तैयार करना, कपड़े साफ करना तथा सफाई इत्यादि कार्यों में ही अधिकांश समय व्यतीत हो जाता है।[11]

इन सब समस्याओं का सामना करने के बाद भी पंजाब क्षेत्र की महिलाओं ने पुरुषों के साथ कन्धे से कंधा मिलाकर संगीत के प्रसार में अध्यापन, पुस्तकें, लेख, पत्रिका व मंच प्रदर्शन कार्यो द्वारा अपना भरपूर योगदान दिया है जिनमें से मुख्य महिला संगीतज्ञ इस प्रकार हैं :

प्राध्यापका संगीतज्ञ श्रीमति स्वरक्षा दत्ता, सरबजीत कौर, अमीता मिश्रा, सीमा चड्ढा, बीबी बलजीत कौर (कीर्तनकार), बीबी गुरदीश कौर (कीर्तनकार), गौरी, वनीता, नीमीता, सुगंधा मिश्रा, दलेर कौर, नसीब, अरुणा वालीया, परमजीत कौर, सीमा चड्ढा, भटटी इयादि हैं।[12]

शोध से यह स्पष्ट होता है कि पंजाब क्षेत्र प्राचीन काल से ही संगीत की सेवा कर रहा है। यहाँ की खुशहाल जलवायु में यहाँ की संस्कृति अपने पूरे यौवन में बरस रही है। इसके विकास में संगीत सम्मेलनों, शिक्षण संस्थानों, संचार माध्यमों, सूरदास श्रेणी, पिछड़ी श्रेणी व महिला संगीतज्ञों का मुख्य योगदान रहा है।

निष्कर्ष

कला के साथ-साथ शिक्षा प्रदान करने की प्रणाली प्राचीन काल से ही पंजाब क्षेत्र की प्रमुख पहचान रही है। पंजाब क्षेत्र की धरती सन्तों, किन्नरों, देवों तथा गन्धर्वों की धरती है। इस धरती पर अनेक ऋषि-मुनियों ने तप किया है। अत: पंजाब क्षेत्र प्राकृतिक तौर पर सुन्दर होने के साथ-साथ पवित्र भी है। वर्तमान काल में भी प्राचीन सन्तों की वंश परम्पराओं की जातियाँ आज भी विद्यमान हैं। यहाँ तक कि कई स्थानों

के नाम तक भी संतों के नाम पर रखे गए हैं। इनके द्वारा स्थापित परम्परा का आज भी अनुकरण किया जाता है। संगीत भी यहाँ की प्राचीन परम्परा रही है।

पंजाब क्षेत्र के गणमान्य गुरुओं द्वारा संगीत की आत्मा को श्रेष्ठ रूप प्रदान किया है, जिसके कारण आधुनिक संगीत की दुनिया में विद्या के अर्थ को ग्रहण कर विद्यार्थी संगीत को व्यवसायिक एवं आर्थिक उन्नति की और ले जा रहे हैं। जिसके फलस्वरूप संगीत के विकास के साथ-साथ सांस्कृतिक मूल्यों का विकास हो रहा है।

शोध का विश्लेष्णात्मक चरण वर्तमान समय के विशेषज्ञों के साक्षत्कार द्वारा सम्पन्न हुआ। जिसका स्वरूप प्रश्नोत्तर एवं संगीतकला विश्लेषण व कलाकारों के प्रस्तुतिकरण के मूल्यांकन पर अधारित हैं।

पंजाब क्षेत्र के गुरुजनों का गुरु शिष्य परम्परा द्वारा शिक्षण देने के विषय में मत लगभग एक-सा था। सभी संगीतज्ञों के विचारों में परम्परागत ढंग से शिष्य परम्परा द्वारा संगीत शिक्षण को ही सर्वोतम विधि माना गया है। आज सभी इस बात को अनुभव करते हैं कि संगीत का प्रचार-प्रसार बड़े व्यापक स्तर पर हो रहा है। संगीत में प्रशिक्षण देने वाले पंजाब क्षेत्र में अध्यापकों की संख्या भी बड़ी है और प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले पंजाब क्षेत्र में अध्यापकों की संख्या भी बड़ी है और प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले पंजाब क्षेत्र में विद्यार्थियों की संख्या में भी कई गुणा वृद्धि हुई है। परन्तु एक बात को इन सभी गुणीजनों ने स्वीकार किया है कि अच्छे कलाकार नहीं निकल रहे हैं। स्पष्ट है, इस व्यवस्था में कहीं कोई त्रुटी अवश्य है। भारत को स्वतंत्र हुए भी 69 वर्ष हो चुके हैं, परन्तु राष्ट्रीय स्तर पर आज जितने भी संगीतज्ञ स्थापित हुए हैं वे सभी कलाकार गुरु-शिष्य परम्परा की ही देन हैं। अत: गुरु-शिष्य परम्परा निर्विवाद रूप से संगीत के प्रशिक्षण में अब तक सबसे सफल विधि प्रमाणित हुई है। परन्तु इसमें भी कुछ त्रुटियाँ हैं जिन्हें दूर का लिया जाए तो निश्चत रूप से और भी अच्छे परिणाम आएँगे।

पंजाब क्षेत्र के संगीतज्ञों ने संगीत की संस्थागत शिक्षण विधि का समर्थन किया है। उनके विचारों में यह अधिक अनुकूल तथा वैज्ञानिक है क्योंकि इसमें सभी को समान रूप से सिखाया जाता है। किसी प्रकार का मतभेद भेदभाव नहीं बरता जाता। सबसे समान शुल्क लिया जाता है। अध्यापकों की नियुक्ति शैक्षणिक व संगीतिक योग्यताओं के आधार पर की जाती है जबकि गुरु-शिष्य परम्परा में गुरु की जो योग्यता है, उसे ही स्वीकार करना पड़ता है। संस्थागत शिक्षण द्वारा एक विद्यार्थी अनेक प्रकार की गायन शैलियाँ एक ही कक्ष में सीख लेता है क्योंकि एक संस्था में कई शिक्षक होते हैं तथा उनकी गायन/वादन शैलियाँ भी विभिन्न होती हैं। अत: कम समय में ही अधिक ज्ञान अर्जित कर सकता है। परन्तु यहाँ प्रश्न उठता है कि क्या संगीत शिक्षण का तात्पर्य केवल ज्यादा शिक्षा देने तक ही सीमित है? नहीं, संगीत शिक्षण का तात्पर्य गुणवत्ता के साथ-साथ संगीत की महत्त्वता को ग्रहण करना है।

पंजाब क्षेत्र के संगीतिक घरानों द्वारा शिक्षित गुरुओं ने शास्त्रीय, उपशास्त्रीय एवं लोक संगीत शैलियों की परम्परा को आज भी जीवित रखा हुआ है। परन्तु वर्तमान समय में ध्रुपद, धमार, ठुमरी, टप्पा, काफी, दादरा, सादरा, इत्यादि शास्त्रीय, उप शास्त्रीय गेय विद्याओं का प्रचलन कम हो रहा है। इसके मुख्य कारण विद्यार्थियों का आधुनिक संगीत के प्रति बढ़ता आकर्षण, शास्त्रीय गायकों का आर्थिक शोषण, शास्त्रीय गायन शैली के प्रति पनपता हुआ विद्यार्थियों का नाकारात्मक दृष्टिकोण है। परन्तु विद्या के प्रति रुचि और सुगम संगीत का विकास हो रहा है। सच्ची बात तो यह है कि मुश्किल काम करने में तप करना पड़ता है, और आज के विद्यार्थी कोई तप करने को तैयार नहीं है।

कलाकारों से मौखिक रूप से साक्षात्कार किये तो कुछ अनचाहे वाक्य प्रगट हुए। जिनको आधार बनाकर शोध के विषय को और शुद्ध व स्पष्ट करने के लिए शोध का गहनता से विश्लेष्ण किया गया। जिसके फलस्वरूप गुणीजनों के गुणों के साथ-साथ अवगुणों को भी समझने का मौका मिला। यहाँ पर केवल गुणीजनों की शिष्ण प्रणाली व नैतिक गुणवत्ता को ध्यान में रखते हुए विश्लेषण किया गया है कि वर्तमान समय के अध्यापक व कलाकार श्रेणी के लोग संगीत को अपनी जायदाद समझ रहे हैं। दो, तीन रागों को तोड़ मरोड़ कर, मनगढंत रागों की उपज करना, दो-तीन नई पुरानी बंदिशों को सीख, उनके मेल से नई बंदिशें तैयार करना व शिष्यों को सीखाना, विद्यार्थियों में गुटबंदी की भावना भरना, विद्यार्थियों के समक्ष दूसरे गुरुजनों के जीवन, संगीत कला व मंच प्रदर्शन का विश्लेषण घटिया ढंग से प्रस्तुत करना, किसी भी कलाकार की कला की प्रशंसा न करना, अपने घराने की उपमा करते हुए दूसरे घरानों की निंदा करना, उनकी संगीतिक कला एवं कलाकारों का मज़ाक उड़ाना, बाकी घरानों के प्रति उदासीनता रखना, शिष्यों को दूसरे गुरुओं के प्रति भड़काना, अपने गुरुओं की उपमा करना व करवाना, ईर्ष्या भावना रखना, अपने व गुरु के संगीतिक कार्यक्रम में मंडली बनाकर दबदबा बनाना, यह सब बातें उनके व्यक्तिगत पूजा करवाने की ओर संकेत करती हैं जो संगीत के अग्रणीय कलाकारों को शोभित नहीं करती।

उनके शिष्यों से जब गुरु जी की शिक्षा प्रणाली के विषय में पूछा गया तो अधिक्तर जवाब मिला कि 'गुरु जी पूरी तरह विद्या नहीं देते। उनमें सैद्धांतिक पक्ष का अभाव है और स्वभाव कड़वा व झगड़ालू है।' साक्षात्कार करते समय शोधार्थी को यह अनुभव हुआ कि माननीय गुरुजन संगीतिक विषय पर शोध कार्य करने वाले शोधार्थियों से नकारात्मक रवैया अपनाते हैं। वह कहते हैं कि शोध कार्य करने वालों ने संगीत को नष्ट कर दिया है, शोध के चक्कर में संगीत किताबों में बंधकर रह गया है, गुरुजनों का शिक्षा व सैद्धांतिक पक्ष के प्रति अभिरुचि रखना उनकी नकारात्मक सोच को उजागर करता है। अधिकतर गुरु अपनी बंदिशे सीखाना पसंद नहीं करते। साक्षात्कार करते समय बंदिश को रिकार्ड नहीं करने देते। उनके विचार में यह सब चीज़े चोरी हो जाती हैं। यह बाते उनकी संगीत के प्रति मनोसंकीर्णता है जो उनकी कला को आगे बढ़ने से रोक रही है।

अधिकांश संगीत विषय के अध्यापक वर्ग व संगीत में एम. ए., एम.फिल, पी.एच.डी आदि उपाधियाँ प्राप्त करने के बाद विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों में अधिकतर अध्यापक वर्ग व विद्यार्थी वर्ग मंच पर स्वतंत्र प्रदर्शन करने में सक्षम नहीं है। यदि है तो केवल सुगम संगीत में हल्की-फुल्की गायकी का मंच प्रदर्शन करने में ज्यादा रुचि रखते हैं। कई बार तो परीक्षा में भी तंबूरा, सितार, व तबला आदि वाद्य यंत्र सह-अध्यापक व तबला वादकों को सुर करते देखा जा सकता है।

आज का विद्यार्थी रियाज़ व साधना न करके विद्वता का सतही ज्ञान प्राप्त करने की होड़ में लगा हुआ है। शिक्षकों में नैतिकता का पतन हो रहा है, विद्यार्थियों से अश्लील बातें करना, उनका मानसिक एवं शरीरिक रूप से शोषण करना, मना करने पर घृणा रखना पाया जाता है। अधिकांश अध्यापक वर्ग में पद नियुक्ति के पश्चात् कार्य स्थल पर रियाज़ का अभाव पाया जाता है। विद्या में अधूरापन व हल्कापन झलकता है। आर्थिक दशा को मज़बूत करने के लिए संगीत कार्य के छोड़ अन्य कार्यों में रुचि रखना इत्यादि मुख्य कारण मौजूद हैं।

वर्तमान समय की पिछड़ी जन-जातियों के संदर्भ में यह निष्कर्ष निकलता है कि कव्वाल, नकाल, भांड, मजबी सिक्ख, रामदासी सिक्ख, मीरासी, बाज़ीगर, रागी, रवाबी, ढाढी, डूम इत्यादि कलाकार अपनी कला से पंजाब का नाम खूब रोशन कर रहे हैं, जिनमें मास्टर सलीम व सुखविन्दर सिंह 'बब्लू' मुख्य हैं। निम्न वर्ग के इन कलाकारों ने फिल्म जगत में अपनी कला द्वारा एक अलग पहचान बनाई है। जिसके फलस्वरूप पूरे विश्व में जालन्धर, होशियारपुर, नकोदर, गोरायां, कपूरथला, फगवाड़ा, दोआबाा क्षेत्रों का नाम पहचान में आया परन्तु यह बात स्पष्ट हो गई है कि यह लोग केवल कला सम्पन्न हैं, इनमें सैद्धांतिक शिक्षा का अभाव भरा हुआ है। यह लोग विद्या अर्जित करना नहीं चाहते इस कारण इनकी पीढ़ी के लोगों में आधुनिकता एवं नवीणीकरण का अभाव स्पष्ट दिखाई देता है। अन्त में हम यह कह सकते हैं कि संगीत के प्रसार में विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों, अध्यापकों, प्राध्यापकों, कलाकारों, महिला संगीतज्ञों, सूरदास श्रेणी, संगीत सभाओं, संगीत सम्मेलनों, निजी संस्थाओं, पंजाब व केन्द्रीय सरकारों का मुख्य योगदान रहा है।

पाद-टिप्पणियाँ

1. बसन्त, संगीत विशारद, संगीत कार्यालय हाथरस, उ. प्र.
2. पैंतल, गीता, पंजाब की संगीत परम्परा, प्रकाशक-राधा पब्लिकेशन्स, दरियागंज, नई दिल्ली
3. बेदी, सोहिन्दर सिंह, पंजाब दी लोकधारा, प्रकाशक भाषा विभाग पंजाब पटियाला, सन् 1971
4. मुहम्मद लतीफ़, पंजाब दा इतिहास, प्रकाश लाहौर बुक शॉप, लुधियाना, सन् 1993.
5. धनकर, रीता, हरियाणा तथा पंजाब की संगीत परम्परा, प्रकाशक संजय प्रकाशन, दिल्ली
6. गर्ग, लक्ष्मी नारायण, हमारे संगीत रत्न, प्रकाशक—संगीत कार्यालय हाथरस, चर्तुथ संस्करण, सन् 1984
7. श्रीवास्तव, हरिशचन्द्र, हमारे प्रिय संगीतज्ञ, प्रकाशक—संगीत सदन प्रकाशन, सन् 1977
8. बलबीर सिंह, 'कंवल प्रीत लड़ी' मासिक पत्रिका सन् 1980-शाम चौरासी घराना।
9. भेंट वार्तालाप स. कृपाल सिंह 'जंडू' जालन्धर, 16 मई 2010
10. भेंट वार्तालाप श्री मति स्वरक्षा दत्ता, चण्डीगढ़, 2 जून 2011
11. भेंट हरि देव, गोरांया, 12 फरवरी 2010
12. भेंट यशपाल शर्मा, चण्डीगढ़, 9 अगस्त, 2011